



Web: parmeshwarkaniyam.org

ईश्वर की व्यवस्था: भाग 1: शैतान की महान योजना—जातियों के विरुद्ध

यीशु के पिता के पास लौटने के कुछ ही वर्षों बाद, शैतान ने जातियों के विरुद्ध अपनी दीर्घकालिक योजना शुरू की।

जब उसका प्रयास, यीशु को अपने साथ जुड़ने के लिए मनाने का (मत्ती 4:8-9), विफल हो गया और यीशु के पुनरुत्थान (प्रेरितों के काम 2:24) ने उसकी सारी आशा को स्थायी रूप से नष्ट कर दिया, तो उसके पास एक ही उपाय बचा: जातियों के बीच वही करना जो वह सृष्टि के प्रारंभ से करता आ रहा है—मनुष्यों को ईश्वर की व्यवस्था न मानने के लिए राज़ी करना (उत्पत्ति 3:4-5)।

लक्ष्य की प्राप्ति के लिए आवश्यकताएँ

इस लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए शैतान ने दो आवश्यक कदम उठाए:

1. जातियों को यहूदी धर्म से अलग करना

पहली आवश्यकता थी, जातियों को यहूदियों के धर्म से अधिकतम दूरी पर ले जाना। यहूदी धर्म की जड़ें, ईश्वर की व्यवस्था और उनकी आज्ञाकारिता में थीं, जो इस्राएल के साथ ईश्वर के संबंध की आधारशिला थी।

2. धर्मशास्त्रीय तर्क की स्थापना

दूसरी आवश्यकता थी, जातियों को एक ऐसा धर्मशास्त्रीय तर्क प्रदान करना, जो यह विश्वास दिला सके कि ईश्वर द्वारा दी गई मुक्ति अब प्राचीन इस्राएल में स्थापित मुक्ति के तरीके से अलग है।

विशेष रूप से, यह तर्क स्थापित करना था कि ईश्वर की व्यवस्थाओं का पालन अब अनिवार्य नहीं है।



यीशु के स्वर्गागमन के बाद, शैतान ने प्रतिभाशाली पुरुषों को प्रेरित किया कि वे एक झूठी उद्धार योजना बनाएं ताकि गैर-यहूदियों को यीशु, इसराएल के मसीहा द्वारा प्रचारित विश्वास और आज्ञाकारिता के संदेश से दूर ले जाया जा सके।

एक नया धर्म: शैतान की योजना का निष्पादन

शैतान ने तब प्रतिभाशाली और प्रभावशाली मनुष्यों को प्रेरित किया। उन्होंने जातियों के लिए एक नया धर्म गढ़ा, जो निम्नलिखित विशेषताओं के साथ पूरा किया गया:

- **नया नाम:** यह धर्म एक नए नाम के साथ आया, जो इसे यहूदी धर्म से अलग दिखा सके।
- **नई परंपराएँ:** इसमें ऐसी परंपराएँ जोड़ी गईं, जो यहूदी धर्म के मूल तत्वों से मेल नहीं खाती थीं।
- **व्यवस्था का त्याग:** मुख्य शिक्षा यह थी कि मसीहा के आगमन का उद्देश्य जातियों को ईश्वर की व्यवस्था के पालन से मुक्त करना था।

शैतान की रणनीति का प्रभाव

यह नया धर्म जातियों को ईश्वर की मूल व्यवस्था से दूर ले गया, जिससे वे मानने लगे कि उनके लिए एक अलग और आसान मार्ग तैयार किया गया है। इस प्रकार, शैतान ने अपनी पुरानी रणनीति को नए तरीके से लागू किया, जातियों को ईश्वर की आज्ञाओं से दूर करने के अपने उद्देश्य में सफल होने का प्रयास किया।

इस्राएल से दूर होना: नवगठित चर्च की रणनीति

हर आंदोलन को जीवित रहने और बढ़ने के लिए अनुयायियों की आवश्यकता होती है। परमेश्वर की व्यवस्था, जिसे तब तक मसीही यहूदियों द्वारा पालन किया जा रहा था, ने उस समूह के लिए चुनौती प्रस्तुत करना शुरू कर दिया जो नवगठित चर्च में तेजी से विस्तार कर रहा था: गैर-यहूदी। [खतना](#), [सातवें दिन का पालन](#), और [कुछ मांसों से परहेज़ करना](#) जैसे आदेश आंदोलन की वृद्धि के लिए बाधा के रूप में देखे जाने लगे।

व्यवस्था में "लचीलापन" का झूठा तर्क

आंदोलन के विस्तार के लिए, नेतृत्व ने धीरे-धीरे जातियों के लिए रियायतें देना शुरू कर दीं। उन्होंने यह तर्क दिया कि मसीहा के आगमन ने गैर-यहूदियों के लिए व्यवस्था के पालन में लचीलापन प्रदान किया।

यह तर्क पुराने नियम (निर्गमन 12:49) या यीशु के चारों सुसमाचारों में कही गई बातों से पूरी तरह रहित था।

यहूदियों की प्रतिक्रिया: व्यवस्था से दूर होने पर असंतोष

कुछ यहूदी, जो यीशु के चमत्कारों और कार्यों के कारण आंदोलन में रुचि रखते थे, सही ढंग से इस बात से परेशान थे कि ईश्वर की दी गई व्यवस्थाओं से दूर होने की प्रवृत्ति बढ़ रही थी।

वे यह देख सकते थे कि जिन व्यवस्थाओं का पालन यीशु, प्रेरितों और उनके अनुयायियों ने निष्ठा से किया था, उन्हें अब धीरे-धीरे त्यागा जा रहा था।

इस्राएल और ईश्वर की अडिग वाचा

आज, लाखों लोग चर्चों में इकट्ठा होते हैं और ईश्वर की पूजा का दावा करते हैं। लेकिन वे इस तथ्य को नजरअंदाज कर देते हैं कि वही ईश्वर ने इस्राएल को अपने लिए अलग किया और एक वाचा स्थापित की, जिसे वह कभी नहीं तोड़ेगा:

“जैसे सूर्य, चंद्रमा और तारों के नियम अडिग हैं, वैसे ही इस्राएल की संतति ईश्वर के सामने कभी समाप्त नहीं होगी, हमेशा के लिए” (यिर्मयाह 31:35-37)।

आशीर्वाद और उद्धार: इस्राएल से जुड़ने की शर्त

पुराने नियम में कहीं भी यह नहीं लिखा गया है कि उन लोगों को आशीर्वाद या उद्धार मिलेगा जो इस्राएल से नहीं जुड़ते:

“और ईश्वर ने अब्राहम से कहा: तुम एक आशीर्वाद बनोगे। और मैं उन लोगों को आशीर्वाद दूँगा जो तुम्हें आशीर्वाद देंगे, और जो तुम्हें शाप देंगे, उन्हें शाप दूँगा; और तुम्हारे द्वारा पृथ्वी के सभी परिवार आशीर्वादित होंगे” (उत्पत्ति 12:2-3)।

स्वयं यीशु ने यह स्पष्ट किया: “उद्धार यहूदियों से आता है” (यूहन्ना 4:22)।

उद्धार की योजना: यहूदियों और जातियों के लिए समान

जो जाति का व्यक्ति मसीह के माध्यम से उद्धार प्राप्त करना चाहता है, उसे वही व्यवस्थाएँ माननी चाहिए जो पिता ने अपनी महिमा और आदर के लिए चुने गए राष्ट्र को दी थीं।

यह वही व्यवस्थाएँ हैं जिनका पालन स्वयं यीशु और उनके प्रेरित करते थे।

पिता का प्रेम और विश्वास का प्रतिफल

पिता उस व्यक्ति के विश्वास और साहस को देखते हैं, चाहे उसकी राह कितनी भी कठिन क्यों न हो। वह अपने प्रेम को उस पर उंडेलते हैं, उसे इस्राएल से जोड़ते हैं, और उसे पुत्र के पास क्षमा और उद्धार के लिए ले जाते हैं। यही उद्धार की योजना है जो सार्थक है, क्योंकि यह सत्य पर आधारित है।

महान आदेश: सुसमाचार का विस्तार

इतिहासकारों के अनुसार, मसीह के स्वर्गरोहण के बाद, कई प्रेरितों और शिष्यों ने महान आदेश का पालन करते हुए यीशु द्वारा सिखाए गए सुसमाचार को जातियों के बीच ले गए।

- **थॉमस** भारत गए।
- **बरनाबास और पौलुस** मैसेडोनिया, ग्रीस, और रोम गए।
- **आंद्रेयास** रूस और स्कैंडिनेविया गए।
- **मत्ती** इथियोपिया गए।

इस प्रकार शुभ संदेश धीरे-धीरे दुनिया भर में फैल गया।

प्रचारित संदेश: विश्वास और आज्ञाकारिता

उन्हें जो संदेश प्रचारित करना था, वह वही था जो यीशु ने सिखाया था। इस संदेश का केंद्र बिंदु पिता था:

1. **विश्वास:** यह विश्वास करना कि यीशु पिता से आए थे।
2. **आज्ञाकारिता:** पिता की पवित्र व्यवस्था का पालन करना।

यीशु ने अपने शिष्यों को आश्वासन दिया था कि वे इस मिशन में अकेले नहीं होंगे। पवित्र आत्मा उन्हें याद दिलाएगा कि मसीह ने उनके साथ बिताए वर्षों में क्या सिखाया था, विशेष रूप से जब वे इस्राएल में सुसमाचार का प्रचार कर रहे थे (यूहन्ना 14:26)।

आदेश का स्पष्ट निर्देश

महान आदेश का निर्देश यह था कि प्रेरित वही सिखाएँ जो उन्होंने अपने गुरु से सीखा था। यह स्पष्ट रूप से ईश्वर के राज्य के आगमन की शुभ सूचना फैलाने का कार्य था।

सुसमाचारों में यह कहीं भी नहीं दिखता कि यीशु ने यह संकेत दिया हो कि उनके मिशनरी गैर-यहूदियों के लिए एक विशेष संदेश लेकर जाएंगे।

उद्धार और कानून: अविभाज्य सत्य

यीशु के शब्दों में कहीं भी यह समर्थन नहीं मिलता कि गैर-यहूदी, केवल यहूदी न होने के कारण, पवित्र और शाश्वत आज्ञाओं का पालन किए बिना उद्धार प्राप्त कर सकते हैं।

प्राचीन लेकिन असत्य धारणा

ईश्वर की पवित्र और शाश्वत व्यवस्था का पालन किए बिना उद्धार की धारणा यीशु के शब्दों में कोई समर्थन नहीं पाती है और इसलिए, चाहे वह कितनी भी पुरानी या लोकप्रिय क्यों न हो, यह गलत है।